AUDITING

B.Com. Honours Part-1, Paper-2

Topic *– Difference Between Accountancy & Auditing*

By- Dr. Jitendra Kumar

P.G. Dept. of Commerce & Business Management

H.D. Jain College, Ara, Bhojpur, Bihar- 802301

लेखाकर्म तथा अंकेक्षण में अन्तर
(Difference between Accountancy and Auditing)

लेखाकर्म तथा अंकेक्षण में अन्तर निम्नलिखित आधारों पर किया जा सकता है—

अंतर का आधार	लेखाकर्म (Accountancy)	अंकेक्षण (Auditing)
1. कार्य की प्रकृति	इसमें पुस्तपालन की जाँच करना, तलपट बनाना, अन्तिम लेखे बनाना तथा चिट्ठा बनाना शामिल किया जाता है।	इसमें पुस्तपालन एवं लेखाकर्म की प्रमाणकों, प्रमाणों एवं स्पष्टीकरण के आधार पर जाँच करना शामिल किया जाता है।
2. उद्देश्य	यह संस्था के लाभ-हानि तथा आर्थिक स्थिति की जानकारी के लिए तैयार किया जाता है।	इसके द्वारा लाभ-हानि एवं आर्थिक स्थिति की शुद्धता का पता लगाया जाता है।
3. कार्य का प्रारम्भ	लेखाकर्म वहाँ प्रारम्भ होता है जहाँ पुस्तपालन समाप्त होता है।	अंकेक्षण वहाँ प्रारम्भ होता है जहाँ लेखाकर्म समाप्त होता है।
4. योग्यता	लेखाकार को लेखाकर्म की पूरी जानकारी होनी चाहिए	इसमें अंकेक्षक को चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट की शिक्षा प्राप्त होनी चाहिए।
5. कर्मचारी	लेखापाल संस्था का एक कर्मचारी होता है।	किन्तु अंकेक्षक बाहरी व्यक्ति अर्थात् संस्था का कर्मचारी नहीं होता है।

अंतर का आधार	लेखाकर्म (Accountancy)	अंकेक्षण (Auditing)
6. समय	लेखाकर्म को सम्पूर्ण अंतिम खाते एक निश्चित समय के बाद बनाये जाते हैं	अंकेक्षण का कार्य पूर्ति की समाप्ति पर किया जाता है।
7. पारिश्रमिक	लेखापाल को निश्चित रूप से वेतन दिया जाता है।	अंकेक्षक का पारिश्रमिक अनुबन्ध के ऊपर निर्भर करता है।
8. सिद्धान्त	लेखाकर्म करते समय कुछ निश्चित सिद्धांतों का पालन करना होता है।	इसमें सिद्धान्तों के समय-समय परिस्थितियों के अनुसार चलना होता है।
9. पूरक	एक लेखापाल अंकेक्षक का कार्य नहीं कर सकता है।	परन्तु एक अंकेक्षक लेखापाल का काम कर सकता है।
10. प्रतिवेदन	लेखापाल कोई प्रतिवेदन नहीं देता है।	कार्य के समापन के बाद एक अंकेक्षक को अपनी रिपोर्ट देनी होती है।